Vidhyayana - ISSN 2454-8596

An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal

www.j.vidhyayanaejournal.org

Indexed in: ROAD & Google Scholar

अटल बिहारी वाजपेयी के काव्य में अभिव्यक्तिगत विशिष्टता

शोधकत्री

जसप्रीत कौर चावला

रोल न.- PH1855037001

शोध निदेशक:डॉ राजेन्द्र सिंह 'साहिल'

पता- सी टी यूनिवर्सिटी, मुल्लापुर

लुधियाना

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.j.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

भूमिका

भारत के पूर्व प्रधानमंत्री और राष्ट्रवाद की मूर्ति श्री अटल बिहारी वाजपेयी की रचनाएं पत्र-पत्रिकाओं में लगातार प्रकाशित होती रहीं। आरंभ में 'धर्मयुग' नामक मासिक पत्रिका के माध्यम से अटल जी की कविताएं पाठक गण तक पहुंँचीं। कविताओं की भाषा सहज, सरल और स्वाभाविक है। अटल बिहारी बाजपेयी कविताओं का अध्ययन करने के पश्चात ज्ञात होता है कि उनके काव्य में खड़ी बोली की प्रधानता अत्यधिक है।अटल जी अपनी कविताओं के माध्यम से जनता के साथ संप्रेषण कर रहे हैं अगर अटल काव्यधारा को जीवन का चित्रण माना जाए तो भाषा इसकी अभिव्यक्ति का एक मात्र माध्यम है। अटल काव्यधारा का कथानक, देशकाल, संवाद, भाषा शैली का उद्देश्य सांकेतिक है। अटल काव्य धारा का ढांचा,शिल्प,शिल्प कला शिल्प विधान, पारिभाषिक शब्द, रसों, अलंकारों और शब्द शक्तियों की तरफ भी ले जाती है। अभिव्यक्ति के आधार पर अटल काव्य में राजनैतिक विरोधाभास अधिक मात्रा में पाया जाता है। सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक और बौद्धिक जीवन में गहरी पैठ बनाते राष्ट्रवाद और जन-जागृति की लहर उत्पन्न करती है।अटल जी की इक्यावन कविताएँ मुक्तक शैली में हैं । अनुभूति के स्वर ' , ' हरी - हरी दूब पर ' , ' पहचान ' , ' गीत नया गाता हूँ ' , ' ऊँचाई ' , ' मौत से ठन गई ' , ' कौरव कौन पाँडव कौन ' , 'आज सेंधु में ज्वार उठा है ' , ' गगन में लहराता है भगवा हमारा ' , ' उनको याद करें ' , ' कोटि चरण बढ़ रहे ध्येय की ओर निरंतर ' , ' अमर है गणतंत्र ' , ' मातृ पूजा प्रतिबंधित ' , ' कंठ - कंट में एक राग है ' , ' सपना टूट गया ' , ' अंतर्द्वन्द ' , ' मनाली मत जइयो ' , ' आओ मर्दो नामर्द बनो ' आदि 51 कविताओं का संग्रह है । 'ये कविताएँ विविध विषयों पर होने के कारण विविध भावमयी हैं ,पर सर्वाधिक कविता राष्ट्रप्रेम , राष्ट्रभक्ति और राष्ट्रीय

अस्मिता पर हैं ।अटलजी स्वभाव से राष्ट्र प्रेमी और उत्साही थे ,अस्तु उनके द्वारा ओजपूर्ण ऐसी कविताओं का सृजन होना स्वाभाविक ही था । मनाली से उन्हें विशेष प्रेम था । इसलिए संग्रह में मनाली पर दो गीत हैं । उनके काव्य में यूँ अनेक रसों का परिपाक हुआ है , पर मुख्य रूप से वीर रस , अदभुत रस और करुण रस का ही अवतरण अधिक हुआ है । मनुष्यता और मानव की नियति पर उन्होंने बहुत लिखा है।वस्तुतः वे ' मानवता विधा ' के कवि हैं।

शिल्प विधान

शिल्प विधान विषय में डॉ कमल किशोर गोयनका अपनी पुस्तक "प्रेमचंद के उपन्यासों में शिल्प विधान" में लिखते हैं कि शिल्प विधि निर्माण या रचना के नियम अथवा सिद्धांतों का वाचक है जिसे हमने टेक्निक के पर्याय के रूप में स्वीकार किया है, और शिल्प विधान शब्द कौशल रचना का प्रबंध अथवा व्यवस्था के अर्थ का द्योतक है। शिल्प विधान शब्द किसी एक कलाकृति के संयोजक अथवा प्रबंध के अभाव को प्रकट करता है। जबकि सिर्फ विधि के अंतर्गत ही किसी कलाकार को समग्र रचनाओं में विधमान सामान्य रचना के नियमों और प्रवृत्तियों को रख कर देखा जा सकता है"। 1

भाषा

भाषा में सहजता और सरलता रचनाकार की अभिव्यक्ति को सौंदर्य प्रदान करती है। इसलिए भाषा का जन समुदाय की पकड़ में आना अनिवार्य होना चाहिए जो अटल काव्य धारा का अनिवार्य तत्व पाया गया है। अटल की कविताओं में शब्दाडंबर की व्यापकता भी पाई गई है। अटल की कविताओं में खड़ी बोली के प्रयोग के साथ- साथ मानक हिंदी और स्थानीय भाषा

का भी प्रयोग हुआ है। भाषा का मिश्रित स्वरूप भाषा की एकरससता को भी तोड़ता है। हिंदुस्तान जैसे बहुभाषी और बहुसंस्कृति देश में भाषा का मिश्रित होना स्वभाविक बन जाता है। इस समय अटल जी ने भाषा के साथ कोई राजनीति न कर भाषा को सहजता से संप्रेषण का साधन माना है। भाषा को मात्र उत्पाद का रूप मानकर भाषा की हावीपन से मुक्त रखा है।

अटल काव्य जन भाषा का बहता हुआ ताजा पानी है जो स्वादिष्टता और मिठास का अहसास कराता है। भाषा का प्रयोग कर अटल जी ने अपनी भारत माता के प्रति सच्ची श्रद्धा भक्ति का प्रमाण प्रस्तुत किया है।

यह मानना है कि जिसकी अभिव्यक्ति जितनी सच्ची होगी, प्रखर होगी उसकी भाषा उतनी ही धारदार मौलिक और अकृतिम होगी। अटल जी की सच्ची अनुभूति में भाव और शब्द एक हो जाते हैं। दोनों की दूरियांॅ मिट जाती हैं। भाषा मोहक हो जाती है। वाहक हो जाती है और रचित कृति अपने उद्देश्य को प्राप्त कर लेती है। भाषा और भाव का अद्भुत योग हमें अटल काव्य में मिलता है।

अटल जी भाषाई कृतिमता का आवरण नहीं ओढ़ते बल्कि बड़ी निर्भीकता, बेबाक़ी और सहजता में अपनी बात कह देते हैं। चाहे वह किसी की निजी बात ही क्यों न हो। उन्होंने शाब्दिक चित्र से सामाजिकता का सरोकार उत्पन्न कर अपनी बात को जनमानस के समक्ष रखा है।

अपनी कल्पना शक्ति के माध्यम से कवि ने नूतन सृष्टि और अभिनव रूप-विधान का प्रयोग किया है।कल्पना ही अटल काव्यधारा का मुख्य आधार है। कविताओं में भावों को समझने में

कोई अड़चन,बाधा, नहीं आती।भाव बिना अवरोध के ही समझ आ जाते हैं। तभी तो पाठकों के मनोभावों का साधारीकरण अटल बिहारी बाजपेयी ने किया है। एक उदाहरण- "मैं शंकर का वह क्रोधानल कर सकता जगती क्षार- क्षार ।

डमरू की वह प्रलय-ध्वनि हूँ जिसमें नचता भीषण संहार। रणचण्डी की अतृप्त प्यास, मैं दुर्गा का उन्मत हास ।

मैं यम की प्रलयंकर पुकार, जलते मरघट का धुआंँधार।

हिंदू तन-मन, हिंदू जीवन, रग-रग हिंदू मेरा परिचय !" 2

रचनाकार ने सहजता से भारतीय समाज को जागृत करने का सफल प्रयास किया है। ऐसा महसूस होता है कि लेखक ने हिंदू ,हिंदी और हिंदुस्तान को बढ़ावा दिया है।अटल जी ऐसा करके अलगाववादी सोच का भी विरोध करते हैं। फिर भी अटल जी कट्टरपंथियों के विरोधाभास से मुक्त नहीं हो पाए,क्योंकि वे सभी अटल जी को कभी मानने को तैयार नहीं हुए हैं। एक उदाहरण -

तब स्वदेश - रक्षार्थ देश का

सोया क्षत्रियत्व जागा था ।

राम-रूप में प्रगट हुई यह ज्वाला,

जिसने

असुर जलाए

देश बचाया,

बाल्मीकि ने जिसको गाया "। 3

भाषा में बिंबों का प्रयोग भाषा को सजीवता, सरलता, आंचलिकता और कलात्मकता इत्यादि गुणों की ओर ले जाता है। अटल जी की निम्नलिखित कविता इसका एक उदाहरण है-

" जइयो तो जइयो

मसाल ले के जाइयो

बिजुरी भई बैरिन

अंधेरिया रात में ।

जइयो तो जइओ,

त्रिसूल बांँध जइयो,

मिलेंगे खालिस्तानी

राजीव के राज में

मनाली तो जइहों

सुरग सुख पइहों

दुख निको लागे, मोहे

राजा के राज में ।" 4

शब्द शक्तियाँ

अटल जी ने अपनी साहित्य अभिव्यक्ति का प्रदर्शन करने के लिए कभी पद्य और कभी गद्य का प्रयोग किया है। साहित्य अभिव्यक्ति के लिए पद्य और गद्य का प्रयोग एक साहित्यकार को प्रसिद्धि की ओर ले जाता है। अटल साहित्य में गद्य और पद्य का मिश्रित रूप मिलता है।कुछ आलोचकों का मानना है कि साहित्य की कोई निश्चित शैली नहीं होती परंतु रचनाकार अपनी अनुभूतियों को व्यक्त करता है। जिस शैली को वह अपनाता है वही शैली उसे सहजता से चरमोत्कर्ष तक ले जाती है ।

"शब्द शक्तियों के प्रभाव से रचनाकार, अलंकार, रस,प्रतीक,बिंब का प्रयोग करता है। जिसके बल से रचनाकार सौन्दर्य भाव, रमणीय अर्थ की व्यंजना, प्रधान अथवा ध्वन्यात्मक को आगे बढ़ता है। जिसके बल पर काव्य की सत्य साधना को प्राप्त किया जा सकता है। किसी शब्द से जो संकेत मिलता है वही संकेत अपने अर्थ को मान्यता देता, लक्षणा,, अभिधा और व्यंजना के आधार पर शब्द शक्ति बन जाता है।" 5

अटल जी की लम्बी कविता 'बबली की दिवाली' में अभिधा शब्द शक्ति का प्रयोग होने के साथ-साथ बाल मनोविज्ञान का चित्रण एवं पशु जीवन को बड़ी सूक्ष्मदर्शिता के साथ प्रस्तुत किया है -

"बबली लौली कुत्ते दो

कुत्ते नहीं खिलौने दो

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.j.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

लंबे-लंबे बालों वाले

फूले पिचके गालों वाले

कद छोटा, छोटा स्वभाव है

देख अजनबी बड़ा ताव है

भागे तो बस शामत आई

मुंह में झटपट पेंट दबाई

दौड़ो मत, ठहरो ज्यों के त्यों,

थोड़ी देर करेंगे भौं-भौं " 6

साहित्य की दृष्टि प्रमाणित करती है कि वे छंद और अलंकार गद्य और पद्य की भाषा को परिमार्जित करते हुए कलात्मक बना देती है। एक अनपढ़ व्यक्ति भाषा की शब्द शक्तियों से परिचित न होकर भी शब्दों के प्रभाव से रसानुभूति कर लेता है। भाषा के मुहावरे, लोकोक्तियांँ उसको रसानुभूति की तरफ ले जाती हैं। शब्द शक्ति भाषा में ओज, चमत्कार, माधुर्य प्रभाव और अभिव्यंजना विशिष्टता का संचार करती है क्योंकि प्रत्येक मुहावरा, लोकोक्ति अपने अर्थ के आधार पर शाब्दिक न होकर विलक्षणता से लाक्षणिकता की तरफ़ ले जाती है।

शब्द शक्तियों के आधार पर अटल काव्य में सरल भाषा में अर्थ गांभीर्य और जटिल भी निकलते हैं। तभी तो अटल काव्य में लक्षणा और व्यंजना भी अभिधामुखी लगती है। इसीलिए कैदी कविराय की कुंडलियां के संपादक मनीष दीनानाथ मिश्र जी लिखते हैं कि -

"अटल जी द्वारा प्रयुक्त घिसे पिटे शब्दों के साथ उनके अर्थ सकल विद्रोह करते हैं और शब्दों को अर्थ सीमा से परे भी फैल जाते हैं। खासकर भाषाओं में ।"...7

अटल काव्य में आस्तिकता, कर्तव्य परायणता, न्यायनिष्ठा, नैतिकता के शाश्वत तत्व मिलते हैं। अटल काव्य का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि अटल समाज के सौंदर्य मूलक की कामना करते हैं। अटल काव्य की कविताएँ सत्यम् शिवम् सुंदरम् का मनमोहक संगम है जो भारतीय काव्य धारा की रस अनुभूति करवाता है।

अलंकार

अटल काव्य में शब्दालंकार में अनुप्रास अलंकार का प्रयोग प्रायः देखा जा सकता है।

जैसे-

"रोते-रोते रात सो गई"....8

इस काव्यावतरण में शब्द शास्त्र कवि अटल जी की अनुभूति स्पष्ट नजर आती है।

कई स्थानों पर अटल जी ने अपने काव्य में अनुप्रास अलंकार के साथ जीवन दर्शन की अभिव्यक्ति करते हुए संसार को नश्वर बताया है-

" जन्म मरण का अविरत फेरा,

जीवन बंजारों का डेरा,

आज यहांॅ, कल कहांॅ कूच है

कौन जानता, किधर सवेरा,

अंधियारा आकाश असीमित, प्राणों के पंखों को तौलें अपने ही मन से कुछ बोलें !" 9

कहीं-कहीं अटल काव्य में प्रतीकात्मकता का भी रमणीय विनियोग हुआ है। बौद्धिक चेतना, संवेदनशीलता के साथ प्रतीकों का भी चयन किया गया है।

मुहावरों और लोकोक्तियों के अभिधा अर्थ की खोज करने पर बड़े रोचक प्रश्न सामने आते हैं। यह अटल साहित्य की विशेषता पाई गई है-

"उसी के लिए यह कहावत बनी है,

मन चंगा तो कठौती में गंगाजल है"।...10

अटल की कविताओं में इस प्रकार की लोकोक्तियों का प्रयोग भाषा को प्रभावशाली एवं प्रमाणित बनाती है। इससे स्पष्ट है कि अटल जी को भाषा का सूक्ष्म ज्ञान था। वे भाषा संरचना में लोकोक्तियों को बड़ी कलात्मकता और सूक्ष्मता से विलय करते हैं। इस संदर्भ के उदाहरण देकर अटलजी अपने काव्य की लोकप्रियता को भी प्रमाणित करते हैं। इस प्रकार की प्रस्तुति देखकर अंदाजा लगाया जा सकता है कि अटलजी खड़ी बोली के साथ-साथ क्षेत्रीय परिवेश की अभिव्यक्ति करने में भी महारत हासिल किए हुए थे। कहने का अभिप्राय

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.j.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

यह है कि अटल काव्य में आंचलिक शब्द, बिम्बों, प्रतीकों की बहुलता चाहे नहीं भी हो,फिर भी उनके काव्य सौंदर्य की अभिव्यक्ति की झलक महसूस की जा सकती है।

योगिक शब्द

अटल काव्य में देशज शब्द प्रयोग की बहुतायता है। जैसे- "कोई विजेता यदि ईर्ष्या से दग्ध

अपने साथी से विश्वासघात करे, " 11

यहांॅ पर दग्ध एक संस्कृत विशेषण है जो यौगिक शब्द होने के साथ-साथ देशज शब्द है जिसका अर्थ निकाला जाए तो दर्द का अर्थ जला हुआ, पीड़ित, दुखी इत्यादि शब्दों का प्रयोग अटल काव्य धारा में शब्द शक्तियों को प्रधानता देकर उनके गुण ज्ञान की जानकारी देता है।

जैसे - "प्राची में अरुणिमा की रेखा देख पाता हूंॅ।" 12

अटल काव्य मे तत्सम और तद्भव शब्दों का प्रयोग भी काव्य की मांग के अनुसार दाताम्य स्थापित करने के लिए किया गया है-

"अन्तर के चीर व्यथा पलकों पर ठिठकी" 13

उपरोक्त पंक्ति में जैसे चीर व्यथा शब्द का प्रयोग करना।

कहीं-कहीं अटल काव्य में विरोधाभास का एहसास भी होता है। जैसे-

"ऊंचाई और गहराई में

आकाश-पाताल की दूरी है" 14

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.j.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

अटल ने साहित्य शास्त्र की दृष्टि से अपने काव्य को काव्य भाषा के आधार पर रसात्मक बनाने के लिए विरोधाभास का प्रयोग भी किया है । ऐसे उदाहरण छंदोंमुक्त हैं। फिर भी आधुनिक छंदोंमुक्त शैली की तरह पद्य को लेकर भाव स्पष्ट करते हैं।

बिम्ब-विधान

बिम्ब-विधान की साहित्यालोचना में एक महनीय पक्ष माना गया है जिस समय रचनाकार अपनी कल्पना का मूर्त रूप देता है। तभी तो बिम्ब की सृष्टि होती है। बिम्ब-विधान अटल की अमूर्त सहाजानुभूति को इन्द्रियग्राह्य प्रदान करता है। सौंदर्यमूलक बिम्ब काव्य भाषा की एक विशेषता है जो अटल काव्य की साधना का उदास रूप है। अटल ने अपनी भावों की अभिव्यक्ति करते समय नियमों को हमेशा आबद्ध रखा है। भाषा शिल्प के प्रति अटल की स्पष्टता आशंसनीय नहीं प्रशंसनीय है ।यही कारण है कि भाषा शैली के माध्यम से काव्य अभिव्यक्ति में अटल को विशुद्ध हिंदूवादी कवि माना जा सकता है।

अटल काव्य का अध्ययन करने के पश्चात अनुभव होता है कि जैसे कि जिस मनुष्य में काव्य रचना करने की प्रकृति जन्मजात से होती है परंतु परिस्थितियाँ उन सभी प्रवृत्तियों का पालक बनकर उसे काव्य अभिव्यक्ति की तरफ ले जाती हैं वहीं हाल अटलजी का देखने को मिलता है। तभी तो अटल काव्य धारा में समग्रता से अन्वयन और एक सारीकरण का अहसास होता है। इसी को बात को मध्येनजर रखते हुए साहित्य को समाज का दर्पण, प्रतिबिंब या अभिव्यक्ति का साधन माना गया है। अटल जी ने अपनी रचनाओं के माध्यम से इस बात को प्रमाणित भी किया है। इसी आधार पर अटल जी समसामयिक को प्रसंगों के लिखने में सक्षम हुए हैं।

हमारे शोध कार्य में भी ऐसे प्रयत्न अधिक व्यवस्थित एवं संगठित होने चाहिए कि रचना और आलोचना के माध्यम से कवि की अभिव्यक्ति को समझा जा सके। जिसका फिलहाल हमारे यहांॅ पर्याप्त मात्रा में अभाव है।अगर यह अभाव समाप्त हो जाएगा तो एक जिज्ञासु व्यक्ति किसी सामान्यीकरण कथन को मानने में संकोच का अनुभव नहीं करेगा। आज जिस प्रकार सच-झूठ तथ्य और मिथ्या स्रोतों को आधार बनाकर कवि समीक्षा की जा रही है उससे नितांत बचा जा सकता है।

निष्कर्ष

कविता स्वयं अपने आप मे रस अलंकार आदि विश्लेषणों के ऊपर है।रस अलंकार से कविता नहीं है । कविता से रस अलंकार है।काव्य सर्वोपरि था काव्य सर्वोपरि है और काव्य ही सर्वोपरि रहेगा भी।काव्य ही जीवन का प्राणवायु है ।रस- अलंकार तत्व को कविता से अलग नहीं जा सकता ।काव्य सर्वोपरि उसी प्रकार से है जैसे नारी सर्वोपरि है न कि उसका शृंगार ।

आज जैसे जैसे भाषा भाषाओं का विकास होता जा रहा है वैसे ही अभिव्यक्ति की अधिकाधिक का परमाणिकता की आवश्यकता पड़ती जा रही है। मनुष्य स्वयं अधिक सभ्य बनकर इतना योग्य बन गया है कि बहुसंख्यक शब्दों का प्रयोग करने लगा है। जैसे अटल जी ने किया है। एक राजनीतिज्ञ के लिए जितना व्यवहारिक होना ज़रूरी है,एक कवि होने के लिए उतना ही भावनात्मक होना भी ज़रूरी है लेकिन अटल जी दोनों के ही संयोग से बने एक विशिष्ट व्यक्ति रहे।अटल बिहारी वाजपेयी भारत में दक्षिणपंथी राजनीति के सबसे उदारवादी शख्सियतों में शुमार हैं। उन्होंने अपने जीवन काल में ढेरों कविताएं लिखीं। संसद से लेकर कई मंचों पर कविता का पाठ भी किया। सदन में विरोधियों को कविता के माध्यम से आक्रामक जवाब

देने की उनकी कला के सभी कायल रहे हैं। अटलजी जी ने अपने काव्य में कई शब्दों का प्रयोग गढ़ कर किया है। इससे भाषा विकास की परंपरा टूटती नज़र नहीं आ रही, न ही उसे अभिव्यक्ति परंपरा से भिन्न मानने की आवश्यकता महसूस हो रही है। सभी कलाओं की भांति अटल काव्य में सत्य की अवधारणा भी पाई जा रही है। जैसे एक मूर्तिकार एक रेखा खींचकर सुंदर मूर्ति का निर्माण करता है उसी प्रकार अटल ने अपने काव्य में अपने भावों की अभिव्यक्ति का जामा पहना,मन को झंकृत करते हुए अपने शब्दों को काव्य का रूप प्रदान किया है। अटल विहारी वाजपेयी के व्यक्तित्व की ये जो विराट उदार-हृदयता है, वहीं उनका काव्य कौशल उन्हें अटल बनाता है। और जब तक देश के 'पटल' पर रहेंगे, वे जिएं या मरें, 'अटल' रहेंगे।

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.j.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

सन्दर्भ सूची

1 कमल किशोर गोयनका, प्रेमचंद के उपन्यासों में शिल्प में विधान, पृष्ठ संख्या-171

2 मेरी इक्यावन कविताएं , परिचय , पृष्ठ संख्या-55

3 मेरी इक्यावन कविताएं ,अमर आग है, पृष्ठ संख्या-50

4 मेरी इक्यावन कविताएं , मनाली मत जइयो,पृष्ठ संख्या-98

5 डॉ सत्य देव चौधरी ,भारतीय तथा पाश्चात्य काव्यशास्त्र का संक्षिप्त विवेचन, पृष्ठ संख्या -26

6 मेरी इक्यावन कविताएं,बबली की दिवाली, पृष्ठ संख्या-94

7 अटल बिहारी बाजपेई की काव्य चेतना, डॉ अरुण भगत, पृष्ठ संख्या -24

8 मेरी इक्यावन कविताएं,रोते-रोते रात सो गई, पृष्ठ संख्या-91

9 मेरी इक्यावन कविताएं,अपने ही मन से कुछ बोलें, पृष्ठ संख्या- 97

10 मेरी इक्यावन कविताएं, मन का संतोष, पृष्ठ संख्या-30

11 मेरी इक्यावन कविताएं, पहचान, पृष्ठ संख्या-18

12 मेरी इक्यावन कविताएं,गीत नया गाता हूँ ,पृष्ठ संख्या-23

13 मेरी इक्यावन कविताएं,गीत नया गाता हूँ , पृष्ठ संख्या - 23

14 मेरी इक्यावन कविताएं, ऊँचाई, पृष्ठ संख्या-25